युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती

ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 18 अंक 29 कुल पृष्ठ-8 12 से 18 जनवरी, 2023 दयानन्दाब्द 198 सृष्टि सम्वत् 1960853123 सम्वत् 2079 मा. कृ.-06

महर्षि दयानन्द जी के बंगाल प्रवास के 150 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में

ऐतिहासिक आर्य समाज कलकत्ता द्वारा विशाल आर्य महासम्मेलन का आयोजन किया गया

आर्य जगत के वरिष्ठ मूर्धन्य संन्यासी, प्रतिष्ठित विद्वान् व आर्य नेता हुए महासम्मेलन में सम्मिलित

बंगाल प्रान्त की समस्त आर्य समाजों व देश के विभिन्न प्रान्तों से हजारों आर्यजनों की रही उपस्थिति

बंगाल की ऐतिहासिक आर्य समाज कोलकाता जिसमें शहीदे आजम सरदार भगत सिंह सरीखे क्रांतिकारियों को भी स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान गुप्त रूप से संरक्षण एवं सम्मान प्रदान करने का गौरव प्राप्त है। उसके तत्वावधान में महर्षि दयानन्द जी के बंगाल प्रवास के 150 वर्ष पूर्ण होने एवं आर्य समाज कलकत्ता के 137वें वार्षिकोत्सव के अवसर पर विशाल आर्य महासम्मेलन का आयोजन गत् 30 दिसम्बर, 2022 से 1 जनवरी, 2023 तक किया गया। विदित हो कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी 16 दिसम्बर, 1872 को प्रथम बार बंगाल पधारे थे और उस समय उनकी भेंट बंगाल के तत्कालीन प्रतिष्ठित समाज सुधारकों व नेताओं से हुई थी। यहाँ पर यह भी उल्लेखनीय है कि आर्य समाज विधानसरिणी कलकत्ता द्वारा 24 दिसम्बर, 2022 से ऋग्वेद पारायण यज्ञ व विविध कार्यक्रम प्रारम्भ कर दिये गये थे जिनका समापन 1 जनवरी, 2023 को हुआ।

इस पूरे आयोजन में आर्य समाज कलकत्ता के संरक्षक श्री श्रीराम आर्य जी की प्रेरणा से आर्य समाज के युवा प्रधान श्री ध्रुवचन्द जायसवाल, मंत्री श्री दीपक आर्य व कोषाध्यक्ष श्री संतोष सेठ, श्री सुरेश अग्रवाल, श्री रमेश अग्रवाल, श्री छोटेलाल अग्रवाल आदि ने अथक परिश्रम करके कार्यक्रम को सफल बनाया। पूरे आयोजन का मुख्य संयोजन श्री दीपक आर्य ने किया। इस महासम्मेलन में आर्य समाज के मूर्धन्य संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी, सीकर से सांसद स्वामी सुमेधानन्द जी, प्रसिद्ध दानवीर ठाकुर विक्रम सिंह जी, परोपकारिणी सभा के पूर्व अध्यक्ष वैदिक विद्वान् डॉ. वेदपाल जी, प्रसिद्ध विद्वान् एवं मनीषी डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री, युवा विद्वान् आचार्य आनन्द पुरुषार्थी, विदुषी बहन ज्योत्सना आर्या, वानप्रस्थ शुचिषद् जी आदि के अतिरिक्त गुजरात के महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी, सिक्किम के महामहिम राज्यपाल श्री गंगा प्रसाद जी व पूर्व केन्द्रीय मंत्री डॉ. सत्यपाल सिंह जी की गरिमामयी उपस्थिति रही।

इस अवसर पर आयोजित ऋग्वेद पारायण महायज्ञ के ब्रह्मा पद को युवा विद्वान् आचार्य सोमदेव शास्त्री जी ने सुशोभित किया तथा आर्य समाज के ओजस्वी भजनोपदेशक श्री भानू प्रकाश शास्त्री ने भजनों के द्वारा श्रोताओं को आनन्दित किया। यज्ञ में मन्त्र पाठ का दायित्व स्थानीय विद्वानों ने बड़ी कुशलता के साथ निभाया। वेद पाठ करने वालों में मुख्य रूप से पं. आत्मानन्द शास्त्री, श्री योगेश राज उपाध्याय, पं. वेद प्रकाश शास्त्री, पं. कृष्णदेव शास्त्री, विदुषी अर्चना शास्त्री तथा गुरुकुल की छात्राएं प्रमुख रहीं।

महासम्मेलन का प्रारम्भ प्रातः ऋग्वेद पारायण यज्ञ के साथ हुआ। कार्यक्रम का शुभारम्भ यज्ञ के पश्चात् पूज्य स्वामी आर्यवेश जी और ठाकुर विक्रम सिंह जी के करकमलों द्वारा 'ओ३म्' ध्वजा के उत्तोलन से हुआ। मुख्य कार्यक्रम मंच से 11 बजे प्रारम्भ किया गया जिसकी अध्यक्षता स्वामी आर्यवेश जी ने की। मंच पर सीकर के सांसद स्वामी सुमेधानन्द जी, ठाकुर विक्रम सिंह जी, महासम्मेलन के स्वागताध्यक्ष श्री दीनदयाल आर्य जी, श्री विनय आर्य जी, प्रसिद्ध विद्वान् वेदपाल जी, डॉ ज्वलन्त कुमार शास्त्री जी, आर्य समाज कलकत्ता के प्रधान श्री ध्रुवचंद जायसवाल व मन्त्री श्री दीपक आर्य आदि विराजमान थे। मंच का संचालन आर्य समाज कलकत्ता के उपप्रधान श्री अशोक सिंह जी द्वारा किया गया। उन्होंने प्रसिद्ध गीत "दुनिया वालों देव दयानन्द दीप जलाने आया था, भूल चुके थे राहे अपनी वो दिखलाने आया था।" प्रस्तुत कर कार्यक्रम को आगे बढ़ाया।

आर्य महासम्मेलन के स्वागताध्यक्ष और प्रसिद्ध दानवीर सेठ दीनदयाल आर्य ने आगन्तुक विद्वानों तथा आर्यजनों का स्वागत करते हुए कहा कि आप सबके आने से इस आर्य महासम्मेलन की विशेष गरिमा बनी है और इस महासम्मेलन से पूरे बंगाल में महर्षि दयानन्द सरस्वती के कार्यों एवं उनके व्यक्तित्व का प्रभाव और अधिक बढ़ेगा। श्री दीनदयाल जी ने आर्य समाज कलकत्ता को इस महान् कार्यक्रम के आयोजन के लिए अपनी ओर से बधाई दी।

स्वागत मंत्री श्री श्रीराम आर्य जी ने भी अपने स्वागत भाषण में सभी विद्वानों तथा आर्यजनों का हार्दिक स्वागत करते हुए उनके प्रति आभार जताया।

तत्पश्चात् विश्वविख्यात योग गुरु स्वामी रामदेव जी महाराज का ओजस्वी वर्चुवल संदेश प्रस्तुत किया गया। जिसे स्क्रीन पर उपस्थित जनसमूह ने देखा व सुना। उन्होंने अपने उद्बोधन में कहा कि महर्षि दयानन्द जी को जो उचित सम्मान व गौरव मिलना चाहिए था, वह नहीं मिला है। योग गुरु ने बताया कि मेरी शिक्षा-दीक्षा और संस्कार का मुख्य आधार आर्य समाज और स्वामी दयानन्द सरस्वती जी रहे हैं। उन्होंने कहा कि मैं सदैव स्वामी दयानन्द

शेष पृष्ठ 5 पर

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

मकर संक्रान्ति महोत्सव – त्रिसूत्री महापर्व

– चमनलाल

भारतवर्ष त्यौहारों, पर्वों का एक अनन्त समुद्र है, जिसमें अनेक मंगलमय पर्वो, त्योहारों की नदियों का पावन संगम निरन्तर होता रहता हैं इन्हीं पर्वो में हमारे विशाल देश की महानता, इन्द्र धनुषी आभा और अखण्डता परिलक्षित होती है। कहां तक गिनाएं जितने अधिक त्योहार हमारे देश में मनाएं जाते हैं, शायद ही विश्व के किसी और देश में मनाए जाते हों। सच तो यह है कि ये पर्व ही हमारी प्राचीन संस्कृति की समृद्धि को उजागर करते हैं। शताब्दियों से व्यक्ति समाज और राष्ट्र का जीवन इन्हीं से प्रेरित होते रहे हैं। हमारे सभी त्योहार महापुरुषों के जन्म निधन, उनके उदात्त विशद जीवन की प्रेरणादायक घटनाओं से जुड़े हैं और साथ ही जुड़े हैं प्रकृति की सुन्दर महामाया से। अतः ये पर्व हमारी संस्कृति के पिरचायक हैं, दर्पण हैं और इसीलिए हमारे जीवन का अंग भी हैं।

इन्हीं त्योहारों की शृंखला में एक स्मरणातीत काल से चले आ रहा महत्वपूर्ण त्योहार 'मकर संक्रांति' भी है। इस त्योहार की एक विशेषता यह है कि यह प्राचीनतम होते हुए भी अन्य त्योहारों की न्याई किसी जाति, वर्ग, देश, महापुरुष विशेष से सम्बन्धित नहीं है और इसीलिए यह काल की सीमाओं से भी बंधा नहीं है। यह प्राकृतिक ऋतुपर्व प्राचीनतम त्योहार है जो सृष्टि के आरम्भ से ही मानव जाति से जुड़ा है।

आयुर्वेद के अनुसार प्रकृति संरचना को व धातुओं के गुण दोषों को ध्यान में रखकर 6 ऋतुएं स्वीकार की गई हैं। जिन्हें सामवेद मन्त्र616 में इस प्रकार वर्णन किया गया है :-

वसन्त इन्नु रन्त्यो ग्रीष्म इन्नु रन्त्यः।

वर्षायण्नु शरदो हेमन्तः शिशिर इन्नु रन्त्यः।।

इन्हीं 6 ऋतुओं- वसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमन्त और शिशिर को यजुर्वेद (22/31) में चान्द्र वर्ष गणना के अनुसार दो-दो आदिदयो अथवा दो-दो मास के जोड़ों को मधु-माधव, शुक्र-शुचि, नभ-नभस्यः, ईष-ऊर्जा, सह-सहस्य, तप-तपस्या कहा गया है।

'मधवे स्वाहा माधवाय स्वाहा, शुक्राय स्वाहा शुचये स्वाहा नभते स्वाहा नभस्याय स्वाहेषाय स्वाहोजार्य स्वाहा सहसे स्वाहा सहस्याय स्वाहा तपसे स्वाहा तपस्याय स्वाहा ऊँ हसस्पतये स्वाहा।'

आयुर्वेद ने चन्द्रमा एवं सूर्य के काल, विभाग करने के गुण के कारण दक्षिणऔर उत्तर दो अयन माने हैं। दक्षिणायन में वर्षा, शरद और हेमन्त ऋतुएं होती हैं। इसको ही विसर्ग काल कहते हैं।

इस काल में चन्द्रमा का प्रकाश अधिक और सूर्य का क्षीण होता है।इससे पृथ्वी और प्राणियों का रस पुष्ट होने से बल बढ़ता है। उत्तरायण में शिशिर, बसन्त और ग्रीष्म ऋतुएं आती हैं। इसे आदान काल कहते हैं। इस समय सूर्य का बल तेज होता है और सूर्य की प्रखर किरणें पृथ्वी से जलीय अंश को सुखा देती है। आयुर्वेद के अनुसार शीत ऋतु विसर्ग के काल एवं आदान काल को सन्धि वाली ऋतु माना जाता है। मकर संक्रान्ति का पर्व इसी ऋतु में आता है जो प्रायः प्रतिवर्ष 14 जनवरी को मनाया जाता है। इस समय शीत ऋतु अपने पूर्ण यौवन पर होती है। अतः इस पर्व के अवसर पर शीत निवारण के ही उपायों का प्रयोग किया जाता है। अधिक शीत होने के कारण शरीर के अन्दर सेनिकलने वाली गर्मी बाहर निकलने में असमर्थ हो जाती है, जिसके फलस्वरूप जठराग्नि (पाचक शक्ति) बहुत तेज हो जाती है। इसलिए इस समय पौष्टिक आहार करने से शरीर पुष्ट होता है। यदि पौष्टिक स्निग्ध, गरिष्ठ भोजन न किया जावे तो जिस तरह से बर्तन भट्ठी पर चढ़ा होने से गर्म हो जलने लगता है, उसी तरह शरीर भी क्षीण होने लगता है। इसीलिए शरीर रक्षा के लिए तिल आदि गर्म प्रकृति के पदार्थों के नाना प्रकार के व्यंजनों का प्रयोग करते और खिचड़ी आदि का कुछ अधिक प्रयोग इस मौसम में किया जाता है। और इसी तरह गर्म वस्त्रों का प्रयोग करके शरीर रक्षा की जाती हैं। समृद्ध लोग दान की भावना और मनुष्यता के नाते अभावग्रस्त और साधनहीन लोगों की सर्दी की पीड़ा को दूर करने के निमित्त यही गर्म खाद्य पदार्थ और कम्बल, स्वेटर लिहाफ आदि बांटते हैं।

उत्पत्ति- यह सृष्टि भगवान की बड़ी अद्भुत रचना है और प्रभु के कौशल्य का प्रतीक है। मकर संक्रांति की उत्पत्ति पृथ्वी और सूर्य की नैसर्गिक गति और उस महाकर्ता के अभेद विधान में बंधकर चलने के कारण हुई है। पृथ्वी जो आठ हजार मील मोटी और चौबीस हजार मील परिधि वाली है, अपनी कीली पर भ्रमण करके चौबीस घण्टे में दिन और रात बनाती है। यही पृथ्वी जब सूर्य के गिर्द (सूर्य पृथ्वीसे तेरह लाख गुना बड़ा है) घूमती है, तो चक्र पूरा करने में 365 दिन और कुछ घण्टे लगाती है, इसे एक सौर वर्ष कहते हैं। पृथ्वी जिस परिधि पर सूर्य के गिर्द परिभ्रमण करती है, उस क्रांति वृत को 12 भागों में कल्पित कियागया है। उन 12 भागों के नाम उन-उन स्थानों पर आकाशस्थ नक्षत्र मिलती-जुलती आकृति वाले पदार्थों के नाम पर रख लिये गये हैं- मेष, वृष, मिथुन, मीन आदि। यही 12 राशियाँ हैं। जब पृथ्वी एक राशि से दूसरी में संक्रमण करती है तो उसे संक्रांति कहते हैं इस प्रकार प्रतिमास संक्रांति आती है परन्तु मकर संक्रान्ति का महत्व अत्यधिक इसलिए है कि इस समय सूर्य दक्षिणायन से उत्तरायण में प्रवेश करने लगता है। उत्तर की ओर गति उन्नति और अभ्युदय का द्योतक है। इस समय प्रकाश बढ़ता जाता है और अन्धेरा कम होने लगता है या यूं कहिये कि दिन बढ़ने और रात घटने लगती है। यह सब इस कारण होता है कि सूर्य 6 मास दक्षिण से निकलता दिखाई देता है जिसे दक्षिणायन कहते हैं इसमें तीन मौसम वर्षा, सर्दी, हेमन्त होता है और यही सूर्य 6 मास उत्तर की ओर से उगता दिखाई पड़ता है जिसे उत्तरायण कहते हैं, इसमें तीन ऋतुएं शिशिर, बसन्त और ग्रीष्म होता है।

मकर संक्रान्ति के तीन रूप

यह महत्वपूर्ण पर्व तीन रूपों में (अध्यात्मिक, आधिभौतिक और सामाजिक) मनाया जाना चाहिए अतः इसे तीन सूत्री पर्व कहना भी अनुचित न होगा।

(क) आध्यात्मिक :- ''देवस्य पश्य काव्यम् न ममार न जीर्यति।'' अथर्व 10-8-32

भगवान की इस काव्यमय सृष्टि रचना के अद्भुत कौशल को देखकर उसकी सत्ता में विश्वास करके, उसका बार-बार धन्यवाद देना चाहिए कि किस प्रकार प्रभु के विधि-विधान में बंधे ये पृथ्वी, सूर्य आदि जड़ पदार्थ इस समय अन्धकार और शीत से मुक्त करा प्रकाश और सुन्दर बसन्त ऋतु की ओर ले जाते हैं।

(ख) आधिभौतिक :- ''सर्व अन्यत् त्यजेत् शरीरमनुपातयेत् अनमीदा स्व क्षेत्रे विराज।''

इस समय अत्यधिक शीत होने के कारण हमें इस भगवान द्वारा दिये गये उत्तम शरीर की सब प्रकार से रक्षा करनी चाहिए। अपने आहार व्यवहार का विशेष ध्यान रखना चाहिए क्योंकि यही योनि भगवान को प्राप्त करने का एक मात्र साधन है। और इसीलिए वेद में इसे 'देवानां प्रियतम' कहागया है, इसके स्वस्थ रहने पर हम सब धर्म परहित कार्यों को कर सकते हैं।

''शरीरमाधम् खलु धर्म साधनम्।''

(ग) सामाजिक '- ''पक्षेभिरपि कक्षेभिः संरभामहे।'' ऋ. 10-134-7

अर्थात् हमें चाहिए कि अभावग्रस्त साधनहीन लोगों को साथ लेकर चलें। इस शीत काल में जहाँ हम सम्पन्न लोग गर्म, पौष्टिक पदार्थों का सेवन करके अपने शरीर की रक्षा करते हैं ठीक इसी प्रकार दान रूप में जरूरतमंद को गर्म वस्त्र, स्वेटर, कम्बल, लिहाफ आदि देकर और तिल, गुड़ आदि के बने व्यंजन इन अभावग्रस्त लोगों को देकर इनकी रक्षा करने का यत्न करें।

मकर संक्रान्ति के पहले लोहड़ी नाम का त्योहार मनाने की रीति भी हमारे देश में प्रचलित हैं। इस अवसर पर स्थान-स्थान पर होली के समान अग्नि प्रज्ज्वलित की जाती है और इसमें गन्ने को तपाकर, इन्हें भूमि पर पटका कर आनन्द मनाया जाता है। यह भी मकर संक्रान्ति का एक अपभ्रंष रूप है। मकर संक्रान्ति को माघी भी कहते हैं, क्योंकि उसी दिन से माघ मास आरम्भ हो जाता है।

अतः हमें त्योहारों को बड़ी श्रद्धा, निष्ठा और उत्साह से मनाने का भरसक प्रयत्न करना चाहिए, क्योंकि ये मृत प्राय जाति को भी नव जीवन का संचार करने की शक्ति रखते हैं, आज हमें इसकी अत्यन्त आवश्यकता भी है।

- एच-64, अशोक विहार, दिल्ली-52

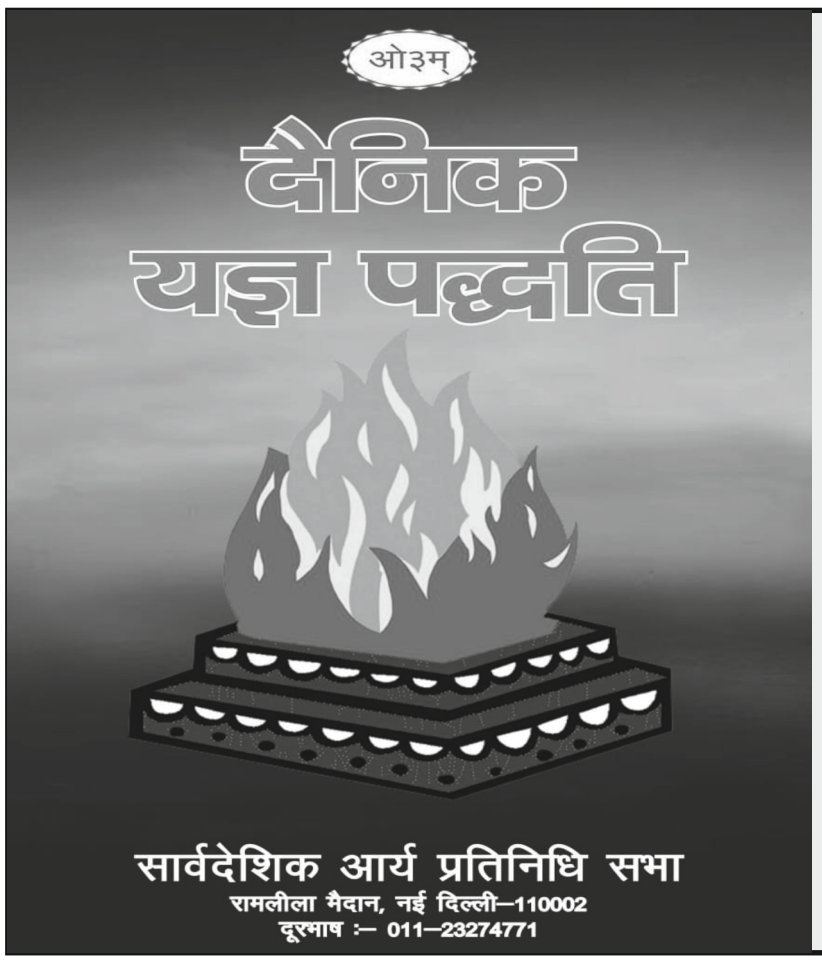

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित

'दैनिक यज्ञ पद्धति'

आर्यजनों की भारी माँग पर आर्य समाजों के साप्ताहिक सत्संगों तथा विशिष्ट बृहद्यज्ञों की सामान्य यज्ञ पद्धति (महर्षि दयानन्द जी द्वारा प्रणीत पंच महायज्ञ सहित) इस पुस्तक में समाहित की गई है। इसके अतिरिक्त विशेष मन्त्र, विशेष प्रार्थनाएँ तथा भजन संग्रह का भी समावेश इस महत्त्वपूर्ण पुस्तक में किया गया है। यज्ञ की यह पुस्तक अत्यन्त आकर्षक तथा सुन्दर टाईटल के साथ बढ़िया कागज के ऊपर छपकर तैयार है। 50 पृष्ठों तथा 23X36 के 16वें साईज की इस पुस्तक का मूल्य 18/ रुपये रखा गया है। लेकिन 100 पुस्तक लेने पर मात्र 1000/– रुपये में उपलब्ध कराई जा रही है। डाक व्यय अतिरिक्त देय होगा।

प्राप्ति स्थान – सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा,
''महर्षि दयानन्द भवन'' 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2
दूरभाष :–011–23274771, 011–42415359
मो.:–8218863689

महर्षि दयानन्द के स्त्री शिक्षा विषयक विचार

– डॉ० (श्रीमती) इन्दु शर्मा, प्रोफेसर, संस्कृत एवं प्राच्यविद्या संस्थान, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र

हमारी संस्कृति के अनुसार इस सृष्टि की उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय के मूल में जो महाशक्तियां विद्यमान हैं उन्हें पुरुष और प्रकृति के नाम से जाना जाता है। वेदान्तवादियों के अनुसार उन्हें ब्रह्म और माया कहा जाता है। जबकि तन्त्रविद्या के प्रणेताओं ने उन्हें शिव और शक्ति के नाम से अभिहित किया है। पुरुष और नारी इन्हीं दोनों शक्तियों का व्यष्टि रूप माने जाते हैं। यही कारण है कि हमारी संस्कृति में ईश्वर की कल्पना अर्धनारीश्वर के रूप में की गई है। जब तक, पुरुष स्त्री को सच्चे अर्थों में मनसा, वाचा, कर्मणा अपनी अर्धांगिनी स्वीकार नहीं करता तब तक वह पुरुष की संज्ञा का पात्र नहीं हो सकता। हमारी परम्परा के अनुसार यज्ञ जैसे पुनीत कार्यों में भी पति और पत्नी दोनों की उपस्थिति अपेक्षित है परन्तु दुर्भाग्य की बात है कि वेदमन्त्रों के अर्थ का अनर्थ करने वाले कुछ स्वार्थी तत्वों ने नारियों को वेदमन्त्रों के अध्ययन तक के अधिकार से वंचित करने का दुस्साहस किया। वे यह भूल गए कि ऋषिकाओं द्वारा आत्मसात् की जाने वाली ऋचाओं के अध्ययन के बिना वेद का पूर्ण ज्ञान असंभव है। इससे यह सिद्ध हो जाता है कि वैदिक काल में नारियों को मात्र वेदाध्ययन का ही अधिकार नहीं था अपितु वे मन्त्रद्रष्ट्री बनने की भी अधिकारिणी थीं। यही युग था जब जीवन के हर क्षेत्र में पुरुष और नारी की सहभागिता और सहकारिता का समारंम्भ हुआ।

स्वामी दयानन्द के नारी–शिक्षा विषयक विचार पूर्णरूपेण तत्सम्बन्धी वैदिक मान्यताओं से प्रेरित ही नहीं अपितु निःसृत भी हैं। पूना प्रवचनमाला के तृतीय प्रवचन में स्त्रीशिक्षा सम्बन्धी अपने विचार व्यक्त करते हुए उन्होंने वर्तमान समाज से आग्रह किया है कि यदि वे सच्चे अर्थों में वैदिक काल में स्त्रीशिक्षा को प्राप्त महत्व से परिचित होना चाहते हैं तो उन्हें आर्य लोगों के इतिहास की ओर देखना चाहिए, जिसमें स्त्रियों के आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत के पालन का उल्लेख मिलता है। उनके उपनयन और गुरु–गृह में वास के संस्कारों की चर्चा उपलब्ध होती है। इस सत्य की सिद्धि के लिए उन्होंने गार्गी, सुलभा, मैत्रेयी, कात्यायनी आदि विदुषियों का उदाहरण दिया है जो बड़े–बड़े ऋषियों एवं मुनियों की शंकाओं का समाधान करती थीं। इसके अतिरिक्त ऐसी अन्य बहुत सी ऋषिकाएं हैं जो मन्त्रों को आत्मसात् करने में सफल रहीं। वस्तुतः स्वामी दयानन्द ने स्त्रीशिक्षा की आवश्यकता का जो महत्व सिद्ध किया है वह सर्वथा वेदसम्मत है।

स्वामी जी से पहले स्त्रीशिक्षा का प्रचार लगभग लुप्तप्राय हो गया था। **'स्त्रीशूद्रौ नाधीयातामिति श्रुतेः'** की भ्रान्ति लगभग प्रचलित हो चुकी थी, स्वामी जी इसके पक्षधर नहीं थे। उन्होंने इसका विरोध करते हुए कहा था कि शिक्षा मनुष्यमात्र का अधिकार है। जो लोग स्त्रियों के पढ़ने का निषेध करते हैं वे सर्वथा मूर्ख, स्वार्थी और निर्बुद्धि हैं। स्वामी जी ने बालक और बालिकाओं की शिक्षा की अनिवार्यता और उन्हें शिक्षा से वंचित रखने के लिए उनके माता–पिता की दण्डनीयता का समर्थन करते हुए लिखा है– ''इसमें राजनियम और जातिनियम होना चाहिए कि पांचवें और आठवें वर्ष से आगे कोई अपने लड़के और लड़कियों को घर पर न रखे। पाठशाला में अवश्य भेज देवें, जो न भेजें वे दण्डनीय हों।''१ उन्होंने यह भी स्पष्ट किया है कि राजा को ऐसा यत्न करना चाहिए जिससे सब बालक और बालिकाएं ब्रह्मचर्यपूर्वक रहते हुए विद्यायुक्त होकर समृद्धि को प्राप्त हों तथा सत्य, न्याय और धर्म का निरन्तर सेवन करें।२ इस कथन में विद्या शब्द का उल्लेख मिलता है। विद्या को केवल उस शिक्षा का पर्याय नहीं कहा जा सकता जो मात्र अक्षरबोध, लिपिबोध और गणितबोध तक ही सीमित हो। विद्या से तात्पर्य है, शिक्षा और संस्कार दोनों का समन्वय। भारतीय शिक्षा–पद्धति के मूल में यही अवधारणा है, क्योंकि यहां केवल अक्षरबोध, लिपिबोध और गणित बोध को अविद्या कहा गया है और आत्मोत्थान विषयक ज्ञान को विद्या माना गया है। तदनुसार मानव का पूर्णत्व विद्या और अविद्या के समन्वय में दर्शाया गया है। आज की शिक्षा का उद्देश्य केवल जीवनोपयोगी साधनों के उपार्जन में सहायक ज्ञान तक सीमित रह गया है। शिक्षक हो अथवा शिक्षार्थी दोनों का शिक्षाविषयक उद्देश्य एक है, और वह है– भौतिक सुख–समृद्धि में आसक्ति और उसकी प्राप्ति। इसी के दुष्परिणामों को देखते हुए नैतिक शिक्षा की अपेक्षा बल पकड़ती जा रही है। समस्त आर्यसमाजी गुरुकुलों और पाठशालाओं में इसका प्रावधान भी किया गया है, परन्तु विश्वविद्यालयीय स्तर पर जब तक इसे एक अनिवार्य विषय का स्थान प्राप्त नहीं होता तब तक स्वामी दयानन्द का स्त्री शिक्षाविषयक आदर्श कार्यान्वित नहीं हो सकता। इसी सत्य को स्पष्ट करते हुए उन्होंने ऋग्वेद का उद्धरण देते हुए कहा है– ''जितनी कुमारी हैं वे विदुषियों से विद्याध्ययन करें और वे ब्रह्मचारिणी कुमारी उन विदुषियों से ऐसी प्रार्थना करें कि आप हम सबको विद्या और सुशिक्षा से युक्त करें।''३

यह तो सर्वथा स्पष्ट है कि शिक्षा से स्वामी जी का अभिप्राय इसे केवल अक्षरबोध, लिपिबोध, गणितबोध और अन्य विज्ञान तथा वाणिज्य की शाखाओं के बोध तक सीमित रखना नहीं है। वे शिक्षा को चरित्र–निर्माण का आधार मानते थे। उनका मत था कि यदि माता–पिता अपने पुत्र तथा पुत्रियों को अच्छी शिक्षा देकर, तत्पश्चात विद्वान् और विदुषियों के समीप बहुत काल तक रखकर पढ़ावें तब वे कन्या और पुत्र सूर्य के समान अपने कुल और देश के प्रकाशक हों।४ सुशिक्षा के महत्व को स्पष्ट करते हुए उन्होंने कहा है– जैसे माताएं सन्तानों को दूध आदि देकर बढ़ाती हैं वैसे ही विदुषी स्त्रियां और विद्वान् पुरुष कुमारियों और कुमारों को विद्या और अच्छी शिक्षा देकर बढ़ाये। उन्होंने विद्या और शिक्षा को मनुष्य के मानसिक और आध्यात्मिक विकास का आधार स्वीकार किया है। दूसरे शब्दों में स्वामी दयानन्द उस वैदिक मान्यता के समर्थक हैं जिसके अनुसार विद्या और अविद्या का समन्वय पूर्णत्व प्राप्ति का साधन हो सकता है। स्वामी दयानन्द शिक्षा को मनुष्य के सर्वांगीण विकास का स्त्रोत मानते थे। ब्रह्मचर्य जीवन पर पुनः–पुनः दिया गया बल उनके इस विश्वास को स्वयं स्पष्ट कर देता है कि शिक्षा वह साधन है जिसका उपार्जन समाज के सर्वांगीण विकास के लिए अनिवार्य है। जब तक स्त्रियां इस क्षेत्र में पुरुष से कन्धे से कन्धा मिलाकर चलने में समर्थ नहीं हो जातीं तब तक समाज का सर्वांगीण विकास सम्भव नहीं। शिक्षा की अनिवार्यता के साथ–साथ उन्होंने इस क्षेत्र में गुरु और गुरुपत्नी के दायित्वों की भी चर्चा की है। उनके अनुसार गुरु और गुरुपत्नी को चाहिए कि वे वेद और उपवेद तथा वेद के अंग और उपांगों की शिक्षा से देह, इन्द्रिय, अन्तःकरण और मन की शुद्धि, शरीर की पुष्टि तथा प्राण की सन्तुष्टि देकर समस्त कुमार और कुमारियों को अच्छे गुणों में प्रवृत्त करावें।६

वस्तुतः स्वामी जी दैहिक, एन्द्रियिक, मानसिक और प्राणविषयक विकास को शिक्षा का अंग मानते थे और गुरु तथा गुरुपत्नी को इनके उपार्जन का स्रोत। उन्होंने स्त्रीशिक्षा के विरोधियों को निरुत्तर करने के लिए **'इमं मन्त्रं पत्नी पठेत्'** उद्धरण का आश्रय लिया है। शतपथ ब्राह्मण में स्पष्टतया उल्लेख मिलता है कि जहां पुरुष विद्वान् और स्त्री अविदुषी होगी अथवा स्त्री विदुषी और पुरुष अविद्वान् रहेगा तो घर में नित्यप्रति देवासुर संग्राम मचा रहना स्वाभाविक है।७ उनके अनुसार पुरुषों की भांति स्त्रियों के लिए व्याकरण, धर्म, वैद्यक, गणित, शिल्प–विद्या का ज्ञान अनिवार्य है, क्योंकि इसके बिना सत्य–असत्य का निर्णय, अनुकूल व्यवहार, यथा योग्य सन्तानोत्पत्ति, उसका पालन, वर्धन और सुशिक्षा सम्भव नहीं। इन शिक्षाओं के अध्ययन के साथ–साथ स्त्रियों के लिए पाकविधि सीखने का भी आग्रह किया गया है।८

स्वामी जी के शिक्षा–सम्बन्धी विचार भारतीय संस्कृति के सर्वथा अनुरूप हैं। तदनुसार ही उन्होंने ईश्वरीय ज्ञान वेद की शिक्षा को सर्वोपरि प्राथमिकता देने का आग्रह किया है। इस बात पर भी बल दिया है कि कन्याओं की शिक्षा भी उतनी ही आवश्यक है जितनी कि बालकों की। वे विदेशी भाषाओं की शिक्षा के विरुद्ध नहीं हैं, परन्तु यह मानते हैं कि वे भाषाएं अपनी भाषा के साथ सहायक रूप में सीखी जाएं।

उनके अनुसार गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का ध्येय विभिन्न विद्याओं और अविद्याओं में निपुणता प्राप्त करने के साथ–साथ चरित्र–निर्माण की दिशा में छात्रों का उचित मार्ग–दर्शन करना भी है। यही कारण था कि विदेशी शासकों की वक्रदृष्टि होते हुए भी गुरुकुल शिक्षा संचालकों ने अपनी शिक्षा नीति में विदेशी शासन का हस्तक्षेप कभी स्वीकार नहीं किया और अपने परिश्रम और जनसामान्य के सहयोग से, बिना किसी शासकीय आर्थिक अनुदान के इन संस्थाओं को प्रगतिपथ पर अग्रसर किया। स्वामी दयानन्द के द्वारा स्त्री–शिक्षा के प्रचार और प्रसार के लिए किए गए उपादेय योगदान के फलस्वरूप आज सरकार ने छात्राओं के लिए स्नातक स्तर तक की शिक्षा निःशुल्क कर दी है। आज माता–पिता अपनी पुत्रियों को शिक्षा दिलाने के लिए उतने ही उत्सुक हैं जितने कि पुत्रों को। यह उन्हीं के द्वारा प्रचारित नारी शिक्षा और नारी–स्वातन्त्रय की विचारधारा का परिणाम है कि आज भारतीय ललनाएं केवल वायुसेना के प्रतिष्ठित पदों पर ही नहीं अपितु अन्तरिक्ष तक की सफल यात्रा करने में सफल हो रही हैं। वे हिमालय के उच्चतम शिखर पर सफल अभियान करने में विश्व में अपना कीर्तिमान स्थापित कर चुकी हैं।

वस्तुतः शिक्षा हमें मानव संस्कृति के आधारभूत शाश्वत संस्कारों से युक्त करती है। भारतीय नारी केवल अपने अधिकारों के लिए ही प्रबुद्ध नहीं है। स्वामी जी ने स्त्रियों को अध्यापिकाओं के पद पर नियुक्त करने का परामर्श देते हुए कहा था कि कन्याओं के विद्यालयों में केवल स्त्री अध्यापिकाओं की नियुक्ति की जाए। उनके अपने शब्दों में ''सब विद्वान् जन अपनी–अपनी विदुषी स्त्री के प्रति ऐसा उपदेश दें कि तुम्हें सबकी कन्याओं को पढ़ाना चाहिए और सब स्त्रियों को सुशिक्षित करना चाहिए।''६ इस उद्धरण में स्त्रियों को सुशिक्षित करने वाली बात यह सिद्ध करती है कि स्वामी दयानन्द प्रौढ़ स्त्री–शिक्षा के भी पक्षधर थे। उन्होंने विदुषी स्त्रियों को कुमारी कन्याओं की विद्या, सुशिक्षा और सौभाग्य में वृद्धि के लिए उतना ही लाभकारी माना है जितना कि जागते हुए मनुष्यों के लिए प्रभातवेला गुणकारी होती है।१० उनके अनुसार विदुषी अध्यापिका को भूमि के तुल्य क्षमाशील, लक्ष्मी के तुल्य शोभायमान, जल के तुल्य शान्त और सहेली के तुल्य उपकारक होना चाहिए।११

अध्यापन कार्य उनके गृहस्थकर्त्तव्य सम्पादन में बाधक न हो इस बात को ध्यान में रखते हुए उन्होंने लिखा है कि श्रेष्ठ स्त्रियों को उचित है कि वे अच्छी शिक्षित दासियों को रखें, जिससे सब पाक आदि की क्रिया और सेवा समय पर हो सके। परिचारिका का गुणोल्लेख करते हुए उन्होंने लिखा है कि यह प्रीतियुक्त, सुकेशिनी, सुन्दर श्रेष्ठ कर्म करने वाली और पाकविद्या में निपुण होनी चाहिए।१२

निष्कर्षतः स्वामी दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश में स्त्रीशिक्षाविषयक जो विचार अभिव्यक्त किए हैं वे वैदिक संहिताओं में प्रतिपादित स्त्री शिक्षा विषयक धारणाओं का अनुमोदन करते हैं और उनकी सार्वकालिक और सार्वभौमिक प्रासंगिकता की सिद्धि में सर्वथा सहायक सिद्ध होते हैं। वास्तव में हमारे देश में स्त्रीशिक्षा का ह्रास यवन आक्रमण काल में ही प्रारम्भ हुआ था। और दासता के उत्तरोत्तर कसते हुए शिंकजे ने हमारे पुरुष समाज को स्त्री शिक्षा के प्रति उदासीन होने के लिए विवश कर दिया था। दासता मनुष्य की मानसिकता के लिए उतनी ही हानिकारक है जितना कि पूर्णिमा के चन्द्रमा के लिए ग्रहण। स्वतन्त्रता से जिस राष्ट्रीयता की भावना का जागरण वांछित था, स्वतंत्रता आन्दोलन की सफलता के लिए नारियों द्वारा जो योगदान अपेक्षित था, वह तभी सम्भव हो पाया जब स्वामी दयानन्द ने अपने स्त्रीशिक्षा समर्थक विचारों को कार्यान्वित करने के लिए उद्बुद्ध भारतीय नागरिकों को आर्य कन्या पाठशालाओं, विद्यालयों, महाविद्यालयों की स्थापना करने की प्रेरणा देकर नारी को देश के प्रति अपने दायित्वों के निर्वाह के लिए सामर्थ्य प्रदान करने का अवसर दिया। इस क्षेत्र में उनका योगदान सदा–सर्वदा स्मरणीय रहेगा। डी. ए. वी. पब्लिक स्कूलों, पाठशालाओं, विद्यालयों और महाविद्यालयों की उत्तरोत्तर बढ़ती हुई संख्या इस तथ्य को स्वयं सिद्ध करती जान पड़ती है। उनके स्त्रीशिक्षाविषयक विचार हमें उनके राष्ट्रप्रेम, स्त्रीकल्याण के प्रति उत्साह, और समाज कल्याण विषयक अदम्य प्रवृत्ति से परिचित कराने में सर्वथा समर्थ हैं।

आर्गेनिक व प्राकृतिक कृषि को समर्पित श्री मनोज कुमार वर्मा के निवास पर ग्राम कादराबाद, जिला–बिजनौर (उ. प्र.) में अथर्ववेद पारायण यज्ञ का आयोजन

स्वामी आर्यवेश जी व स्वामी आदित्यवेश जी ने यज्ञ में सम्मिलित होकर याज्ञिक परिवार को दी शुभकामनाएँ

श्री अंकित शास्त्री ने किया यज्ञ का पौरोहित्य

दिनांक 4 व 5 जनवरी, 2023 को आर्य समाज के यशस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी तथा स्वामी आदित्यवेश जी ने ग्राम–कादराबाद, जिला–बिजनौर निवासी श्री मनोज कुमार वर्मा के निवास पर आयोजित अथर्ववेद पारायण यज्ञ में भाग लिया। श्री मनोज कुमार वर्मा आर्गेनिक कृषि व प्राचीन जीवन पद्धति के प्रबल समर्थक हैं और उन्होंने अपने निवास पर ही आर्गेनिक सब्जियों व फलों के पेड़ उगाकर एक सुन्दर बगीचा तैयार किया हुआ है जिसमें वे किसी भी प्रकार का रासायनिक खाद या जहरीली दवाओं का प्रयोग नहीं करते। उनका संकल्प है कि वे एक बड़ा केन्द्र ऐसी खाद्य वस्तुओं के लिए तैयार करेंगे। अपने निवास पर आयोजित यज्ञ में स्वामी आर्यवेश जी व स्वामी आदित्यवेश जी को आमंत्रित कर उन्होंने चिर–प्रतिक्षित जिज्ञासा पूरा किया। उन्होंने स्वामी जी के सम्मान में भोजन सामग्री भी सभी आर्गेनिक जुटाई हुई थी, जिसमें बाजरा, तिलक–चावल, लाल चावल व मकई आदि के आटे की रोटियां, आर्गेनिक गाजर, मूली व गांठ गोभी का सलाद, आर्गेनिक गुण तथा देशी गाय का घी भी भोजन में सम्मिलित किया हुआ था।

इस अवसर पर यज्ञ में अपना प्रवचन देते हुए स्वामी आर्यवेश जी ने जहां मनुष्य जीवन की सार्थकता पर प्रकाश डाला वहीं उन्होंने श्री मनोज कुमार व उनके पूरे परिवार की मुक्त कंठ से प्रशंसा की और कहा कि शुद्ध सात्विक खान–पान व प्राचीन जीवनशैली अपनाने के कारण श्री मनोज कुमार जी व उनका परिवार अत्यन्त प्रशंसा का पात्र है। श्री मनोज कुमार जी के पुत्र शौर्य कुमार वर्मा तथा उनकी सुपुत्री सुश्री अंशिका वर्मा भी बड़े प्रतिभावान बच्चे हैं और उनमें भी अपने पिता के अनुरूप प्राचीन भारतीय जीवनशैली के प्रति विशेष आकर्षण है। यज्ञ के आचार्य श्री अंकित कुमार शास्त्री लम्बे समय से श्री मनोज कुमार वर्मा के यहाँ यज्ञ करवाने के लिए आते रहे हैं। उन्होंने बहुत ही सुन्दर तरीके से वेद पाठ करके यज्ञ को सम्पन्न कराया। स्वामी आर्यवेश जी ने यज्ञ के महत्त्व पर भी प्रकाश डाला और कहा कि जैसे सभी वनस्पतियों में रासायनिक खाद व जहरीली दवाओं का प्रयोग न करने से भोजन सामग्री प्रदूषण मुक्त रहती है उसी प्रकार यज्ञ करने से पूरा वायुमण्डल प्रदूषण से मुक्त हो जाता है। अतः हमें अपने परिवारों में यज्ञ करना चाहिए और स्वास्थ्य को सुरक्षित रखने के लिए आर्गेनिक खाद्य सामग्री का प्रयोग करना चाहिए।

श्री मनोज कुमार के निमंत्रण पर उनके सम्बन्धी भी बड़ी संख्या में यज्ञ में सम्मिलित हुए। विशेष रूप से श्री अशोक कुमार वर्मा व उनका परिवार शामली से यज्ञ में सम्मिलित होने के लिए आया हुआ था। स्वामी आर्यवेश जी व स्वामी आदित्यवेश जी के साथ श्री धर्मेन्द्र कुमार भी कार्यक्रम में सम्मिलित रहे। कार्यक्रम के उपरान्त कालागढ़ के रामगंगा सागर में सेवारत इंजीनियर श्री आकाश चौहान के आग्रह पर स्वामी जी शीडल बांध देखने के लिए गये। उनके साथ श्री अंकित शास्त्री, श्री शौर्य कुमार वर्मा आदि भी थे। इस कार्यक्रम से प्रेरित होकर सभी ने पुनः कारदाबाद आने का निमंत्रण दिया और उनका विशेष सम्मान किया।

बंधुआ मुक्ति मोर्चा के कार्यकर्ता श्री अशोक वशिष्ठ जी का 45वाँ जन्मोत्सव धूमधाम से मनाया गया

बंधुआ मुक्ति मोर्चा के कर्मठ कार्यकर्ता श्री अशोक जी के 45वें जन्म दिवस के अवसर पर उनके आवास नांगलोई, दिल्ली में विशेष यज्ञ का आयोजन किया गया जिसमें आर्य समाज के यशस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी आदित्यवेश जी व श्री ऋषिराज शास्त्री जी विशेष रूप से सम्मिलित हुए। यज्ञ बहन पूनम आर्या व बहन प्रवेश आर्या ने सम्पन्न करवाया। हरियाणा के चरखी दादरी में जिला रोजगार अधिकारी बहन शशि वशिष्ठ व उनकी छोटी बहन इन्दू वशिष्ठ ने भी कार्यक्रम में सम्मिलित होकर अशोक जी को जन्मदिन की ढेर सारी बधाई एवं शुभकामनाएं दी।

यज्ञ के उपरान्त स्वामी आर्यवेश जी ने संक्षेप में जन्मदिवस के महत्त्व पर प्रकाश डाला और कहा कि अशोक जी बड़े सौभाग्यशाली हैं कि वे आज अपना 45वाँ जन्मदिन मना रहे हैं। उनके अन्दर सेवा का बहुत बड़ा गुण है और वे दुःखी, असहाय व बीमार लोगों की सेवा में उत्साह के साथ रुचि लेते हैं। विश्वविख्यात आर्य संन्यासी स्वामी अग्निवेश जी के साथ लगभग 20–25 वर्ष कार्य करने के बाद जब स्वामी जी अस्वस्थ हुए तो अशोक जी ने उनकी अविस्मरणीय सेवा की। अशोक जी के व्यक्तित्व में सेवाभाव, संस्कार उनके माता–पिता व उनके बुजुर्गों के द्वारा प्राप्त हुआ। ऐसे कर्मठ, निष्ठावान व समर्पित कार्यकर्ता के उत्तम स्वास्थ्य एवं शतायु होने की हम परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं।

इस अवसर पर स्वामी आदित्यवेश जी ने भी अशोक जी को अपनी आत्मीय

शुभकामना देते हुए कहा कि अशोक जी सदैव स्वस्थ रहते हुए इसी प्रकार अपने कर्त्तव्यों का निर्वहन करते रहें। अशोक जी हमारे बहुत ही अन्तरंग साथी हैं और उनका स्वभाव अत्यन्त मिलनसार है। स्वामी आदित्यवेश जी व श्री ऋषिराज शास्त्री ने अशोक जी को एक शॉल भेंटकर उनका स्वागत किया। स्वामी आर्यवेश जी ने उन्हें मिठाई का एक पैकेट भेंट किया तथा बहन पूनम व प्रवेश आर्या ने विशेष च्यवनप्राश देकर उनके उत्तम स्वास्थ्य की कामना की। यज्ञ में उन्होंने सपत्नीक भाग लिया। स्वामी जी ने अशोक जी के सुपुत्र चि. नमन तथा सुपुत्री विधि एवं पूरे परिवार को भी आशीर्वाद दिया। कार्यक्रम के उपरान्त सभी ने मिलकर प्रीतिभोज में भाग लिया और कार्यक्रम अत्यन्त आनन्ददायक रहा।

पृष्ठ 1 का शेष

ऐतिहासिक आर्य समाज कलकत्ता द्वारा विशाल आर्य महासम्मेलन का आयोजन किया गया

जी के विचारों एवं मन्तव्यों को प्रचारित–प्रसारित करता हूँ और करता रहूँगा। महर्षि के ऋण को हम कभी भी नहीं उतार सकते। स्वामी दयानन्द जी ने स्वतंत्रता आन्दोलन तथा समाज सुधार में अपना ऐतिहासिक योगदान दिया था। वे गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के प्रबल प्रवक्ता थे। उनके बंगाल आगमन के 150 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में आयोजित इस आर्य महासम्मेलन के समस्त आयोजकों और विशेषकर आर्य समाज कलकत्ता को मैं हार्दिक शुभकामना देता हूँ।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नेता यशस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि स्वामी दयानन्द जी का जीवन समाज में व्याप्त कुरीतियों को खत्म करने तथा वेद प्रचार के लिए समर्पित था। उन्होंने कहा कि हमारी आज की दुर्दशा का कारण है वेद विमुख होना। स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने वेद मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित किया था। स्वामी दयानन्द जी ने आर्य समाज की स्थापना करके पूरी मानवता के कल्याण का कार्य किया। आज अत्यन्त आवश्यकता है कि हम सबको स्वामी दयानन्द जी द्वारा दिखाये गये रास्ते पर चलकर वेद ज्ञान को जन–जन तक पहुँचाने का संकल्प लेना चाहिए। वेद आधारित रास्ते पर चलकर ही मानवता का कल्याण किया जा सकता है। वर्तमान समय में पूरे देश में अन्धविश्वास एवं पाखण्ड का बोलबाला हो रहा है। इसलिए हम सभी को कमर कसकर आर्य समाज तथा स्वामी दयानन्द जी के सिद्धान्तों को पूरे देश में प्रचारित–प्रसारित करने का कार्य करना चाहिए। आज आर्य समाज की ओर सभी आशा की दृष्टि से देख रहे हैं कि आर्य समाज अपने क्रांतिकारी एवं तर्कसंगत विचारों से पूरे देश को अन्धविश्वास एवं पाखण्ड से निजात दिलाये और वेद आधारित मन्तव्यों को लागू कराने का कार्य करे। स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि वर्ष 2024 में स्वामी दयानन्द सरस्वती जी की दूसरी जन्मशती आ रही है, जिसे पूरे आर्य जगत को भव्यता के साथ मनाने का कार्यक्रम निश्चित करना चाहिए और जगह–जगह कार्यक्रम आयोजित करके स्वामी दयानन्द जी द्वारा किये गये कार्यों से जन–जन को अवगत कराना चाहिए।

सीकर से सांसद स्वामी सुमेधानन्द जी ने महासम्मेलन को सम्बोधित करते हुए घोषणा की कि आगामी वर्ष 2024 में हमें महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की दूसरी जन्मशती मनाने के लिए तैयारी शुरू करनी चाहिए। उन्होंने सरकार से महर्षि के सम्मान में कम से कम पांच स्थानों पर शानदार स्मारक स्थापित करने की भी मांग की। स्वामी सुमेधानन्द जी ने कहा कि वर्तमान समय में महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा प्रतिपादित शिक्षा प्रणाली प्रासांगिक है। क्योंकि प्राचीन वैदिक शिक्षा प्रणाली में बच्चे का सर्वांगीण विकास निहित है।

प्रसिद्ध दानवीर व आर्य नेता ठाकुर विक्रम सिंह जी ने आर्यों को झकझोरते हुए कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती की जो लोग जानबूझकर उपेक्षा कर रहे हैं उनको पहचानने की जरूरत है, वह कोई कितना बड़ा भी व्यक्ति हो। हमें डंके की चोट से दयानन्द सरस्वती के व्यक्तित्व एवं कृतित्व से देश दुनिया को अवगत कराना है। जब लाखों आर्य लोग एकत्रित होकर अपनी सिंह गर्जना करेंगे तो किसी सरकार की हिम्मत नहीं कि वह घुटने न टेके।

श्री विनय आर्य जी ने सुझाव दिया कि बंगाल में अधिकाधिक संख्या में बंगाली भाषा में पुस्तकों का प्रकाशन कराकर गांव–गांव में निःशुल्क वितरण करने की योजना बनानी चाहिए।

मेरठ से पधारे परोपकारिणी सभा के पूर्व प्रधान डॉ. वेदपाल जी ने कहा कि महर्षि पुनर्जागरण के प्रणेता थे। उन्होंने आर्ष परम्परा को पुनः स्थापित करके शिक्षा के क्षेत्र में क्रांतिकारी कार्य प्रारम्भ किया था। महर्षि दयानन्द समाज की रूढ़ियों एवं

अवैदिक परम्पराओं को समाज के पतन का कारण मानते थे। अतः उन्होंने सदैव शास्त्रार्थ, व्याख्यान एवं लेखन के द्वारा धार्मिक अन्धविश्वास, पाखण्ड, सामाजिक अन्याय, आर्थिक असमानता आदि पर चोट की।

अमेठी से पधारे प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री ने कहा कि स्वामी दयानन्द जी ने स्वभाषा, स्वदेश और स्वधर्म के लिए आंदोलन चलाया था। उनके योगदान की तुलना किसी अन्य महापुरुष से नहीं की जा सकती। वे हर क्षेत्र में सर्वोपरि रहे। वे सत्य के उपासक एवं उद्घोषक थे।

उड़ीसा के युवा विद्वान् आचार्य सुदर्शन देव ने अपने व्याख्यान में कहा कि गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को सही ढंग से अपनाने से ही मानव का कल्याण होगा।

आचार्य आनंद पुरुषार्थी ने कहा कि इन कार्यक्रमों की सार्थकता तभी है जब हम जमीन पर उतरकर काम करेंगे। जमीनी स्तर पर उतरकर कार्य करने से ही महर्षि दयानन्द के सपनों का भारत बन पाएगा।

आचार्य सोमदेव शास्त्री जी ने कहा कि आर्य समाज वास्तव में आदर्श मानव बनाने का आंदोलन है और हमें अपने को और अधिक तैयार करना होगा।

इस अवसर पर सभी वक्ताओं ने महर्षि दयानन्द जी की कोलकाता/बंगाल यात्रा और उसके ऐतिहासिक महत्व पर विस्तार से प्रकाश डाला और आज के सन्दर्भ में आर्य समाज के आन्दोलन की भूमिका पर विचार रखे। इसी उद्घाटन सत्र में स्व. आचार्य प्रो. उमाकान्त उपाध्याय जी द्वारा रचित उनकी अंतिम पुस्तक 'महर्षि वचन सुधा', डॉ ज्वलन्त कुमार जी द्वारा लिखित 'बंगला में महर्षि दयानन्द', बंगला भाषा में अनुवादित चार पुस्तकें यथा :– 1. पं. चम्मूपति जी द्वारा रचित योगेश्वर श्रीकृष्ण, 2. डॉ. भवानीलाल भारतीय द्वारा रचित यजुर्वेद एक सरल परिचय, 3. स्वामी विद्यानन्द सरस्वती जी द्वारा रचित 'भारत भाग्य विधाता दयानन्द' एवं 4. ऋग्वेद एक सरल परिचय आदि पुस्तकों का विमोचन हुआ।

सायंकालीन सत्र का विषय 'महर्षि की महिमा' का था जिसकी अध्यक्षता स्वामी आर्यवेश जी ने की।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि सिक्किम के महामहिम राज्यपाल श्री गंगा प्रसाद जी ने कहा की वैदिक ज्ञान ही मनुष्य के शांति का आधार है तथा आज के समय में वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में भी आमूल–चूल परिवर्तन की आवश्यकता है।

विद्वान् वक्ताओं ने महर्षि की महत्ता और उनकी प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला। सर्वश्री स्वामी सुमेधानन्द जी, धर्मेन्द्र जिज्ञासु, डॉ. वेदपाल जी, डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री, भानुप्रकाश जी आर्य आदि वक्ताओं ने अपने–अपने विचार रखे। पं. योगेश राज उपाध्याय जी ने इस सत्र का संचालन किया।

31 दिसम्बर को प्रातः यज्ञ के पश्चात् कर्मठ कार्यकर्ता श्री रमेश अग्रवाल जी ने वानप्रस्थ की दीक्षा ली और दीक्षा गुरु स्वामी आर्यवेश जी ने इनका नया नाम महात्मा रमेश मुनि वेद सैनिक रखा।

यज्ञ के बाद संस्कार और कर्मकाण्ड पर सम्मेलन प्रारम्भ हुआ जिसका संचालन पं राहुल देव जी ने किया। प्रसिद्ध विद्वान् डॉ. वेदपाल जी ने इस सत्र की अध्यक्षता की। इस सम्मेलन में सर्वश्री स्वामी आर्यवेश जी, डॉ. वेदपाल जी, डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री, आचार्य सोमदेव जी, आचार्य सुदर्शन देव जी, आचार्य आनन्द पुरुषार्थी जी आदि ने अपने–अपने विचार रखे।

सायंकालीन सत्र में वेद सम्मेलन का आयोजन हुआ। वैदिक विद्वान् मुनि शुचिषद् वानप्रस्थ ने इस सम्मेलन का संयोजन किया और अध्यक्षता डॉ. वेदपाल जी ने की। मंगला चरण पाणिनी कन्या विद्यालय (वाराणसी) की छात्राएँ सुश्री मुदिता शास्त्री, प्राची शास्त्री, सत्या शास्त्री के जटा/दंड/महावामदेव्य के पाठ द्वारा प्रारम्भ हुआ। जिन वक्ताओं ने वेदों की महिमा और महत्ता का प्रतिपादन किया उनमें सर्वश्री डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री, आचार्य सोमदेव जी, आचार्य आनंद पुरुषार्थी जी, आचार्य ब्रह्मदत्त जी, पं. भानुप्रकाश आर्य आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

1 जनवरी, 2023 को प्रातःऋग्वेदीय पारायण यज्ञ की पूर्णाहुति हुई। रविवारीय सामूहिक साप्ताहिक सत्संग पर मुनि शुचिषद् वानप्रस्थ जी ने सत्यार्थ

अगले पृष्ठ पर जारी

यह था महर्षि दयानन्द जी का असली स्वरूप

– खुशहाल चन्द्र आर्य

ऋषि दयानन्द दया, करुणा और मानवता के सागर थे। वे सदा गाली देने वाले को फल व मिठाइयाँ, जहर देने वालों को क्षमादान और विरोधियों को सम्मान देते थे। वे कभी भी अपने सुख–दुःख के लिए न चिन्तित हुए और न रोए, मगर देश, धर्म, जाति की दुर्दशा, नारी की दुर्गति और देश में फैले हुए अज्ञान, डोंग, पाखण्ड, गुरुडम पर निरन्तर व्यथित होते रहे और उन्हें दूर करने के लिए संघर्ष करते रहे। उन्हें सदा यही पीड़ा व्यथित किए रहती थी कि भारत पुनः जगत गुरु के गौरव पद पर कैसे प्रतिष्ठित हो? धर्म, भक्ति तथा परमात्मा के नाम पर फैली हुई मनगढ़न्त पोप–लीलाएँ कैसे दूर हो। इन झूठे पाखण्डी गुरुओं, महन्तों, सन्तों आदि के द्वारा भोली–भाली जनता को बहकाने ठगने, अज्ञानता की ओर जाने की प्रवृत्ति पर कैसे विराम लगे। देश सत्य, ज्ञान एवं विद्या के प्रकाश से प्रकाशित होकर कैसे दुःख, दरिद्रता, निर्धनता, रोग, शोक, पशुता आदि से मुक्त हो। ऋषि की मार्मिक पीड़ा रही है–

इक हूक सी दिल में उठती है, इक दर्द जिगर में होता है।
हम रात को उठकर रोते हैं। जब सारा आलम सोता है।।

ऋषि जी सदा देश के दुर्भाग्य, दुर्गति, कलह, पतन एवं परस्पर की फूट पर रोए, जो देश कभी सुख–शान्ति, मानवता और धन–धान्य का भण्डारी था, आज वह कितनी दीन–हीन अवस्था में है। यह पीड़ा उन्हें सदा बेचौन रखती थी। एक दिन प्रयाग में स्वामी जी गंगा के किनारे बैठे हुए प्राकृतिक सौन्दर्य का आनन्द ले रहे थे, उन्होंने देखा एक स्त्री मरा हुआ बच्चा हाथों पर उठाए हुए गंगा में प्रविष्ट हुई, कुछ गहरे पानी में जाकर उसने बच्चे के शरीर पर लपेटा हुआ कपड़ा उतार लिया और रोते–बिलखते हुए उस बालक के शव को उसने पानी में प्रवाहित कर दिया। ऋषि जी इस हृदय विदारक दृश्य को देखकर अपने को संभाल नहीं सके, वहीं करुण स्वर में बोले–हाय! हमारा देश इतना निर्धन हो गया है कि मृतक शरीर के लिए कफन भी नहीं जुड़ता? उनकी आँखों से आँसुओं की धारा अविरल बहने लगी। कभी यह भारत धन–धान्य, ऐश्वर्य और विभूतियों से भरा–पूरा था सोने की चिड़िया कहलाता था, आज देश की यह दयनीय दशा है? वे देश की निर्धनता तथा दुर्दशा पर घण्टों चिन्तन–मनन करते रहे।

महर्षि दयानन्द ने देश भर का भ्रमण किया, उन्होंने वाणी तथा लेखनी से सभी को प्रभावित किया जिधर से निकले, उधर ही वैचारिक क्रान्ति, सत्य तथा वेदानुकूल विचारों की छाप छोड़ते गए। अनेक राजे–महाराजे, धनी–मानी उनके शिष्य बन गए बड़े–बड़े धुरन्धर विद्वानों से उनके शास्त्रार्थ हुए सभी उनकी विद्या, बुद्धि तथा तेज और बल से प्रभावित रहे। उन्होंने सत्य को स्थापित करने के लिए दुनिया को झुकाया, असत्य और अज्ञान के सामने स्वयं कभी नहीं झुके, दूसरों को बदला स्वयं नहीं बदले। जो भी उनके सम्पर्क में आया, उसके विचारों और जीवन का कायाकल्प हो गया। उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व में अद्‌भुत चुम्बकीय आकर्षक शक्ति थी। घोर शत्रु भी उनके सामने नतमस्तक हो जाते थे। वे दिव्य गुणों के खान थे, उनका सम्पूर्ण जीवन प्रेरक, आदर्श शिक्षक और नवजीवन

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती

दायक था। उनके दिव्य जीवन से न जाने कितनों ने अपने जीवन संभाले और ऊपर उठाए। प्रेरक घटनाओं, बातों और उपदेशों से इतिहास भरा पड़ा है।

ऋषि का जीवन दर्शन हमारे लिए मील का पत्थर है। भोगी, विलासी, दुर्व्यसनों में फंसे मुन्शीराम के जीवन को ऋषि जी के एक भाषण ने बदल दिया। उनके जीवन ने ऐसी करवट बदली कि वे मुन्शीराम से श्रद्धानन्द बन गए। स्वामी श्रद्धानन्द ने देश–धर्म–जाति के लिए जो प्रेरक कार्य किए हैं, वे हमेशा स्वर्णाक्षरों में अंकित रहेंगे। यदि हम जीवन उत्थान, निर्माण तथा देश–धर्म, जाति आदि की सेवा का पाठ व शिक्षा लेना चाहें तो स्वामी श्रद्धानन्द से बढ़कर कोई प्रेरक जीवन नहीं मिलेगा।

मुन्शीराम की तरह ही अमीचन्द का जीवन भी बुराइयों तथा दोषों से भरा हुआ था। किसी सभा में ऋषिवर के प्रवचन से पूर्व उन्होंने भजन सुनाया, भजन बड़ा ही मधुर था। सहज ही ऋषि जी की सत्य वाणी निकली–अमीचन्द। तुम हो तो हीरे मगर कीचड़ में फँसे हो। इस प्रेरक व प्रभावी वाक्य ने अमीचन्द के जीवन में आग लगा दी। भाव–विचार और जीवन बदल गया। बाद में इसी अमीचन्द ने भजनों के माध्यम से आर्य समाज का बड़ा प्रचार एवं प्रसार किया। ऋषि की वाणी और नजर में अद्‌भुत जादू था, जो सिर पर चढ़कर बोलने लगता था।

मृत्यु का अन्तिम दृश्य ऋषि जी की सहनशक्ति आस्तिकता, प्रभुभक्ति, मृत्यु से निर्भयता आदि को देखकर नास्तिक गुरुदत्त विद्यार्थी आस्तिक बन गए, उनके सोच–विचार बदल गए, उन्होंने अपना पूरा जीवन ऋषि के मिशन को समर्पित कर दिया।

पं. लेखराम ऋषि जी के जीवन और विचारों पर इतने दीवाने हुए कि पूरा जीवन आर्य मुसाफिरों में गुज़ार दिया। ऋषि मिशन पर बलिदान होकर आर्यजनों को सन्देश दे गए। तकरीर और तहरीर का काम बन्द न होने देना।

महात्मा हंसराज ने सारा जीवन सादगी, त्याग, सेवा और फकीरों में रहकर ऋषि मिशन को समर्पित कर दिया। ऋषि के जीवन चरित्र को देखकर न जाने कितने दीवाने, मस्ताने और जुनून वाले बने हैं, उन सभी को स्मरण करना सीमित स्थान में सम्भव नहीं है उन सभी के व्यक्तित्व, कृतित्व एवं योगदान को स्मरण व नमन।

ऋषि जी के जीवन के अनेक प्रेरक उदाहरण घटनाएँ व बातें हैं जो आज के जीवन और जगत् को सँभालने, सुधारने व ऊपर उठने की शिक्षा व प्रेरणा देती हैं। स्वामी दयानन्द जी का जीवन खुली किताब है। उनकी कथनी और करनी एक थी। उनका जीवन बोलता था, जो कहा उसे कर दिखाया। प्रभु विश्वास तथा सत्य उनके जीवन का आधार था।

यह लेख मैंने ऋषि दयानन्द की अमरगाथा जिसके लेखक डॉ. महेश विद्यालंकार हैं, उससे उद्धृत किया है। इसमें ऋषि जी का जीवन बहुत उत्तम व प्रेरणादायक है। सुधी पाठकगण इससे प्रेरणा लेकर अपने जीवन को उत्तम बना सकें, इसी उद्देश्य से यह लेख लिखा है।

– 180 महात्मा गांधी रोड, (दोतल्ला)
कलकत्ता–700007
मो. 9830135794

जीवनोपयोगी शुभ विचार

दूसरों की बढ़ोतरी से अपना मिलान करके दुःखी मत होइए और न ही व्यर्थ की प्रतिस्पर्धा में उतरकर होश खोइए। प्रतिस्पर्धा का कहीं अन्त नहीं है। ईर्ष्या एवं दूसरों को सुखी देखकर दुःखी होने का स्वभाव मानसिक तनाव और अनेकानेक रोगों का कारण बनता है, जबकि दूसरों को सुखी देखकर आनन्दित होने का मज़ा अपने आप में किसी स्वर्गिक सुख से कम नहीं है।

अपने जीवन रूपी आधी भरी, आधी ख़ाली गिलास के आधे ख़ाली भाग को देख–देखकर और अपनी उपलब्धियों को नज़रअंदाज़ करके व्यर्थ में दुःखी मत होइए। जो पास में नहीं हैं उसे देखकर निराश होने की बजाय जो पास में है उसे देख कर आप सदा आशावादिता के साथ खुशियाँ बटोरिए। सदा सकारात्मक द्रष्टिकोण (Positive Thinking) अपनाइए। जैसी दृष्टि–वैसी सृष्टि।

इस सृष्टि में सभी समान नहीं हो सकते। यहाँ तक कि एक ही माँ की कोख से उत्पन्न भाई–बहन में भी प्रत्येक का अपना एक अलग व्यक्तित्व है। यह भेद जन्म–जन्मांतर के शुभाशुभ कर्मों का प्रतिफल है। कर्मवाद सत्कर्मों की प्रेरणा देता है और सप्त व्यसनों से बचाता है। जैसा कोई कर्म करेगा वैसा ही उसे फल मिलेगा। अच्छे कर्मों के दारा इस जीवन और अगले जन्म को निखारना आपके अपने हाथ में है। गीता में योगीराज श्रीकृष्ण जी ने फल की कामना किए बिना अच्छे कर्म करने की प्रेरणा दी है – 'कर्मणेवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन्'

इस मर्म को समझने के बाद बहुत से मानसिक तनावों से सहज ही मुक्ति मिल जाती हैं और कर्तव्य परायणता का पथ प्रशस्त हो जाता है।

– मधुर प्रकाश, दिल्ली

पृष्ठ 1 का शेष

ऐतिहासिक आर्य समाज कलकत्ता द्वारा विशाल आर्य महासम्मेलन का आयोजन किया गया

प्रकाश की कथा की। प्रातःकालीन सत्र की अध्यक्षता आर्य संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी ने की तथा मुख्य अतिथि गुजरात के महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी रहे एवं विशिष्ट अतिथि बागपत से सांसद डॉ. सत्यपाल सिंह जी तथा आर्य नेता श्री सुरेश आर्य जी भी उपस्थित रहे।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि आचार्य देवव्रत जी ने महर्षि दयानन्द जी को श्रद्धांजलि देते हुये स्वयं को आर्य समाज व गुरुकुलीय शिक्षा का सिपाही बताया। गुरुकुलीय शिक्षा पर जोर देते हुये उन्होंने कहा कि राष्ट्र व समाज निर्माण के लिए गुरुकुलों को उन्नत करने की आवश्यकता है और हम सबको भी अपने बच्चों को गुरुकुलों में भेजना चाहिये। आचार्य जी ने आर्यजनों से अपील की कि वे संगठित होकर महर्षि दयानन्द सरस्वती के विचारों को समाज के समक्ष प्रस्तुत करें। अपनी संगठित शक्ति के बल ही हम महर्षि दयानन्द सरस्वती जी को उचित सम्मान व गौरवपूर्ण स्थान दिलाने में सफल हो सकते हैं। वर्तमान समय में युवाओं को आर्य समाज में लाना अत्यन्त आवश्यक है। क्योंकि पुरानी पीढ़ी के लोग धीरे–धीरे जा रहे हैं और नई पीढ़ी के लोगों का प्रवेश कम हो रहा है। यह हम सबके लिए चिन्ता का विषय है। आचार्य जी ने आर्यजनों को अपने आत्मावलोचन व संगठन की वर्तमान स्थिति की समीक्षा करने की बात कही। उन्होंने कहा कि मैंने अपने बच्चे गुरुकुलों में पढ़ाये और मैं स्वयं भी गुरुकुल में पढ़ा हूँ। इसलिए मैं औरों को भी यह कहने का अधिकार रखता हूँ कि वे अपने बच्चों को गुरुकुल में पढ़ाने का संकल्प लें।

पूर्व केन्द्रीय मंत्री एवं वर्तमान में बागपत से सांसद डॉ. सत्यपाल सिंह जी ने अपने ओजस्वी वक्तव्य में सम्मेलन के सफल आयोजन के लिए आर्य समाज कलकत्ता की भूरि–भूरि प्रशंसा करते हुए कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का बंगाल आगमन उनके जीवन में एक नया मोड़ लाने वाला सिद्ध हुआ। बंगाल आगमन से पूर्व महर्षि दयानन्द जी अपना व्याख्यान संस्कृत भाषा में देते थे किन्तु बंगाल आगमन के बाद उन्होंने हिन्दी भाषा में भाषण देना प्रारम्भ किया। इसी प्रकार कहा जाता है कि बंगाल आगमन से पूर्व महर्षि केवल एक कोपीन धारण करते थे, किन्तु बाद में उन्होंने पूरे वस्त्र पहनने प्रारम्भ कर दिये थे। इसी प्रकार महर्षि बंगाल में वेद विद्यालय प्रारम्भ कराना चाहते थे जिसके लिए वे देवेन्द्र नाथ ठाकुर, उमेश चन्द्र ठाकुर, ईश्वरचन्द विद्यासागर, केशवचन्द्र सेन सरीखे विद्वानों से मिले और विचार–विमर्श किया। स्वामी दयानन्द जी की विचारधारा वेद आधारित है। इसीलिए वे पूरी मानवता के कल्याण की योजना देकर गये। आज आर्य समाज को महर्षि के बताये मार्ग पर चलते हुए वैदिक मान्यताओं को प्रचारित–प्रसारित करना चाहिए और इसके लिए एक बृहद योजना तैयार करनी चाहिए। उन्होंने कहा कि मैं आर्य समाज की इस प्रकार की महत्त्वाकांक्षी योजना को अपना पूरा योगदान देने के लिए तैयार हूँ।

इस अवसर पर श्री सुरेश चन्द्र आर्य ने कहा कि आर्य समाज अन्धविश्वास और पाखण्ड के खिलाफ अपनी आवाज उठाता रहा है। आज भी धार्मिक क्षेत्र में अन्धविश्वास बढ़ रहा है, महिलाओं पर अत्याचार हो रहे हैं, लव–जिहाद जैसी चुनौतियां पूरे हिन्दू समाज के सामने मुंह बाये खड़ी हैं। ऐसे में आर्य समाज को अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभानी चाहिए।

सायंकालीन अन्तिम सत्र में आर्य समाज बड़ा बाजार के प्रधान श्री आनन्द देव आर्य जी का सार्वजनिक अभिनन्दन किया गया। मुनि शुचिषद् वानप्रस्थ, पं. योगेश राज उपाध्याय, आचार्य ब्रह्मदत्त व पं. राहुलदेव जी ने सम्माननीय व्यक्तित्व का अभिषेक किया तथा आर्य समाज कलकत्ता के प्रधान श्री ध्रुवचन्द जी व मन्त्री श्री दीपक आर्य जी ने भी उन्हें अभिनन्दन पत्र, शॉल व चैक आदि प्रदान किया।

इस अवसर पर डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री ने आर्य नेताओं का आह्वान किया कि आप सब आर्य समाज के विद्वानों के संरक्षण और उनके संवर्द्धन पर विशेष ध्यान देने की कृपा करें।

महासम्मेलन के अन्त में बंगाल के आर्य विद्वानों और कार्यकर्ताओं को स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया गया। मंत्री श्री दीपक आर्य जी ने सम्मेलन में पधारे सभी विशिष्ट अतिथि, संन्यासी, विद्वान् एवं प्रतिभागियों और आगन्तुक महानुभावों का धन्यवाद किया तथा कार्यक्रम को सफल बनाने में जिन साथियों ने अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया उनकी भूरि–भूरि प्रशंसा की। कार्यक्रम सफलता के साथ सम्पन्न हुआ।

वैदिक विद्वान आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी का 55वाँ जन्मोत्सव ऑन लाईन माध्यम से मनाया गया

मानवीय मूल्यों के उत्थान में समर्पित आचार्य चंद्रशेखर शास्त्री – स्वामी आदित्यवेश

वैदिक विचारों को विश्व में गौरवान्वित करने वाले आचार्य चंद्रशेखर – प्रो. अनिल राय

आचार्य चंद्रशेखर शास्त्री महर्षि दयानंद के वैदिक चिंतन के वाहक हैं – ओम सपरा

अध्यात्म पथ पंजीकृत मासिक पत्रिका के तत्वावधान में अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त वैदिक विद्वान एवं अध्यात्म पथ पत्रिका के यशस्वी सम्पादक आचार्य चन्द्र शेखर शास्त्री जी का 55वाँ जन्मोत्सव आनलाईन जूम के माध्यम से मनाया गया। जन्मोत्सव के अवसर पर भजन, संध्या व वैदिक सत्संग का विशेष आयोजन रखा गया था। इस अवसर पर तेजस्वी युवा संन्यासी सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा के अध्यक्ष स्वामी आदित्यवेश जी, प्रो. अनिल राय जी, श्री ओम सपरा जी, डॉ. राजन मान जी (हरियाणा), डॉ. अजय आर्य (छत्तीसगढ़), डॉ. श्वेत केतु शर्मा (बरेली, उत्तर प्रदेश) आदि गणमान्य महानुभाव सम्मिलित रहे।

आर्य समाज के तेजस्वी युवा संन्यासी, गुरुकुल धीरणवास, हिसार के अध्यक्ष स्वामी आदित्यवेश जी ने अपने वक्तव्य में कहा कि आचार्य चन्द्रशेखर जी एक सरल, सौम्य और निर्मल भाव के हैं। आचार्य जी ने अपनी विद्वता से देश–विदेश में चेतना जागृत करने में जुटे हुए हैं। आचार्य जी अपनी लेखनी के माध्यम से आज की युवा पीढ़ी को जागरूक करने में लगे हुए हैं। आचार्य जी ने ऑन लाईन के माध्यम से अनेकों कार्यक्रम आयोजित करते रहते हैं जिसके माध्यम से लोग जुड़कर अपने विचारों से लोगों को लाभान्वित करते हैं। वर्तमान समय में यह एक अच्छा माध्यम है। ऋषि की वैदिक विचारधारा को जनसाधारण तक पहुंचाने में वे अनवरत लगे हुए हैं। आज उनका 55वाँ जन्मोत्सव मनाया जा रहा है, हम उन्हें इस जन्मदिन के अवसर पर कोटिशः बधाई एवं शुभकामना देते हैं तथा उनके उत्तम स्वास्थ्य की कामना के लिए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं।

आयोजन के प्रारंभ में स्वस्तिवाचन व स्वागत गीत की प्रस्तुति आर्य जगत की सुविख्यात विदुषी आचार्या प्रीति एवं कन्या गुरूकुल लोवांकलां की छात्राओं ने अपनी प्रस्तुति से परिपूर्ण शुभकामनाएं प्रदान की। इसके उपरांत द्रोणस्थली आर्ष कन्या गुरूकुल देहरादून की वैदुष्य से परिपूर्ण विदुषी बहन आचार्या श्रद्धांजलि ने आयुष्काम मंत्रों का वाचन करके आचार्य जी को स्वस्थ दीर्घ जीवन, राष्ट्र व समाज के लिए समर्पित व्यक्तित्व को प्रखर तेजस्वी बनाने के लिए परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना की।

मुख्य अतिथि प्रो. डा. अनिल राय, डीन, इन्टर नेशनल रिलेशन, दिल्ली विश्वविद्यालय ने आचार्य चन्द्र शेखर शास्त्री के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रेरणादायक उद्बोधन से परिपूर्ण कर शुभकामनाएं प्रदान की।

आयोजन की अध्यक्षता कर रहे पूर्व मैट्रोपोलिटन मजिस्ट्रेट एवं वरिष्ठ साहित्यकार श्री ओम सपरा जी ने अपने उद्बोधन में कहा की ऋषि की वैदिक विचारधारा को जनसामान्य तक पहुंचाने का महत्वपूर्ण कार्य आचार्य चन्द्र शेखर शास्त्री जी कर रहे हैं। उन्हें जन्मदिन की ढेर सारी शुभकामनाएं।

विशिष्ट अतिथि राष्ट्रीय गीतकार डॉ. जय सिंह आर्य, कनाडा से श्रीमती सरोजिनी जौहर, आस्ट्रेलिया से श्रीमती प्रेम हंस ने काव्य के मनोरम संगम से आचार्य जी को जन्मदिन की बधाई दी।

गीत संगीत के हृदय स्पर्शी वातावरण में गायक कलाकार के रूप में भजन सम्राट नरेन्द्र आर्य सुमन, अन्तर्राष्ट्रीय भजनोपदेशिका कविता आर्या, जितेन्द्र प्रभाकर सरस, पं रमेश चंद्र कौशिक, नरेश वर्मा धुरंधर, साईं नूपुर नांगिया आदि ने भजन गीतों से आचार्य जी की व्यक्तित्व समाज के लिए समर्पित जीवन व देश तथा समाज के लिए आर्य समाज के योगदान पर मधुर संगीत व कन्ठ से मन्त्रमुग्ध कर दिया।

बंगलौर से सारस्वत अतिथि श्री एस. पी. कुमार फकीरे दयानंद ने मानवीय मूल्यों के उत्थान में समर्पित व्यक्तित्व आचार्य जी को जन्मदिन की शुभकामनाएं दी।

हरियाणा से सारस्वत अतिथि डॉ. राजन मान जी ने उनके कृतित्व पर प्रेरणादायक उद्धरण देते हुवे प्रकाश डाला।

छत्तीसगढ़ से डॉ. अजय आर्य जी ने शास्त्री जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि कोरोना के संक्रमण ने जीवन की गति थाम दी थी सब कुछ स्तब्ध होकर रुक गया था। रुकावट के उस दौर में भी आचार्य चंद्रशेखर शास्त्री जी न रुके न थके। इनके ब्रह्मत्व में 20 लाख आहुतियों के माध्यम से 1 माह तक महामृत्युंजय महायज्ञ का ऑनलाइन भव्य आयोजन हुआ। जिसमें दिल्ली, मुंबई, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, मध्य प्रदेश, गुजरात, झारखंड, आंध्र प्रदेश, हिमाचल, उत्तराखंड आदि देशों के 20 प्रान्तों और अमेरिका, कनाडा, मॉरीशस, दुबई, लंदन, ऑस्ट्रेलिया, ताइवान आदि 12 देशों के लोगों ने यज्ञ में आहुति देकर पुण्य प्राप्त किया। आज उनको जन्मदिन की ढेर सारी शुभकामनाएँ।

हिंदी सलाहकार समिति भारत सरकार के पूर्व सदस्य व आर्य जगत के सुविख्यात विद्वान, लेखक बरेली उ. प्र. के आचार्य डॉ. श्वेत केतु शर्मा ने जन्मदिन की शुभकामना देते हुए कहा कि आचार्य जी की वैदिक सेवा समाज के लिए अनुकरणीय है।

आयोजन की सफलता में प्रिं. अरूण आर्य, यशपाल आर्य, अशोक सुनेजा, अश्वनी नांगिया, सुरेन्द्र चौधरी, संतोष नंदवानी, डॉ. श्रीमती पूनम सुनेजा, श्रीमती पूनम नांगिया ने इस भव्य कार्यक्रम का सफल आयोजन किया।

अन्त में अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त वैदिक विद्वान् आचार्य चन्द्र शेखर शास्त्री जी ने ऑन लाईन के माध्यम से जुड़कर अपनी शुभकामनाएं देने वाले सभी अतिथियों एवं आत्मीय स्वजनों, आर्यजनों का आभार व धन्यवाद व्यक्त किया।

इस कार्यक्रम में श्री रामपाल शास्त्री, डॉ धर्मवीर सेठी, आचार्य जयवीर वैदिक, श्री तुलसीदास नंदवानी, श्रीमती कुसुम भंडारी, श्रीमती ईश्वर देवी, श्री भारत सचदेवा, श्रीमती मोहिनी देवी, श्रीमती मधु कुमार, श्री किशोर आर्य, श्री सत्यपाल वत्स, श्रीमती दमयंती गुप्ता, श्रीमती गीता शर्मा, श्रीमती उषा सिडाना आदि देश–विदेश के गणमान्य महानुभाव बहुत बड़ी संख्या में सम्मिलित हुए।

महर्षि आप एक बार वापिस आ जाओ हमें जगाने को

– दीपक कुमार छिल्लर

पाखण्डियों का संसार भरा पड़ा है, अब यहाँ रिझाने को,
कोई तो हो आप जैसा इस संसार में हमारा पथ–प्रदर्शक।
वैदिक शिक्षाएं एवं संस्कार ही हैं, भव–सागर में बताने को,
वैदिक ऋचाएं, वैदिक गीत, वैदिक संगीत है सुनाने को।
है अंधेरा घनघोर यहाँ अब आ जाओ वैदिक संस्कृति बचाने को,
है निर्धनता हममें वैदिक संस्कृति और संस्कारों की, भर जाओ अब इस खजाने को।
वैदिक संस्कारों को समझाने को, वैदिक शिक्षाओं को अपनाने को,
महर्षि आप एक बार वापिस आ जाओ हमें जगाने को।।1।।

बिन वैदिक शिक्षा के दलदल बन रही है जिन्दगी हमारी,
वैदिक संस्कार और वैदिक संस्कृति लगती है हमें बहुत प्यारी।
पाखण्डियों के मायाजाल से बचाकर आपने हमारी जिन्दगी सुधारी,
वैदिक शिक्षाओं को अपनाकर कट जाती है मन की बीमारी।
अपनाएं वैदिक शिक्षाओं को जीवन में तो परिपूर्ण हो जाती है कमी सारी,
है अलग पहचान वैदिक संस्कृति और संस्कारों की,
है अलग इसकी शिक्षाएँ संस्कारी।
महर्षि आप जैसा अब कौन है यहाँ पाखण्ड के खिलाफ हमें जगाने को,
महर्षि आप एक बार वापिस आ जाओ हमें जगाने को।।2।।

– म. नं.–1022, ग्राम सभा कालोनी, सरदार पटेल,
झील के पास, पूठकलां, दिल्ली–110086, मो.:–9990422051

आर्य समाज सुपेला, भिलाई में स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज का 96वाँ बलिदान दिवस समारोह पूर्वक मनाया गया

आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के अनन्य शिष्य, आर्य समाज के नेता व स्वतंत्रता सेनानी, अमर बलिदानी स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के 96वें बलिदान दिवस के अवसर पर 25 दिसम्बर, 2022 को आर्य समाज सुपेला, भिलाई (उत्तर प्रदेश) में कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसमें बृहद यज्ञ, प्रवचन एवं सम्मान हुआ।

इस अवसर पर महामंत्री श्री राजाराम प्रसाद जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि आर्य समाज निरन्तर कार्य कर रहा है तो इसके प्रेरणा स्रोत महर्षि दयानन्द जी के बाद स्वामी श्रद्धानन्द जी का नाम आता है। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय हरिद्वार की स्थापना करके अप्रतिम कार्य किया था।

मुख्य अतिथि प्रो. जनेन्द्र दीवान जी ने कहा कि महापुरुष वे होते हैं जो देशहित सर्वप्रथम व सर्वोपरि मानते हैं, देश है तो हम हैं। स्वामी श्रद्धानन्द जी की एक घटना का वर्णन करते हुए अपनी ओर से स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज को श्रद्धांजलि अर्पित की।

यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य राजेश शास्त्री जी ने कहा कि अंग्रेजी सभ्यता और अंग्रेजों के प्रति विरोध करते हुए स्वामी श्रद्धानन्द जी ने दिल्ली के चांदनी चौक में अंग्रेजों की संगीनों के सामने अपनी छाती खोल कर गोली चलाने के लिए कहा, परन्तु अंग्रेजो को पीछे हटना पड़ा और मार्ग खुल गया, उसके पश्चात् स्वामी श्रद्धानन्द जी ने विशाल हिन्दू–मुसलमान की मिली–जुली सभा को सम्बोधित किया। स्वामी श्रद्धानन्द जी के विचार को सुनकर भीड़ ने स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के जयकारे लगाने लगी। जामा मस्जिद के मिम्बर से वेद मंत्र का पाठ करके प्रवचन देने वाले वे पहले आर्य संन्यासी थे। जिन्होंने 4 अप्रैल, 1919 को जामा मस्जिद से आम जनता को सम्बोधित किया यह अपने आप में ऐतिहासिक क्षण था। उन्होंने आजादी के लिए सभी को मिलकर लड़ने की प्रेरणा दी। स्वामी श्रद्धानन्द जी का देश की आजादी में महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है।

कार्यक्रम के अन्त में कोषाध्यक्ष श्री उमाशंकर जी ने आये हुए आर्यजनों तथा अतिथियों का स्वागत एवं सम्मान किया। श्री रामनाथ राय जी ने सभी लोगों का आभार एवं धन्यवाद प्रकट किया। कार्यक्रम भव्यता के साथ सम्पन्न हुआ।

स्वामी श्रद्धानन्द जी का 96वाँ बलिदान दिवस जयपुर की आर्य संस्थाओं एवं आर्य समाज वैशालीनगर के संयुक्त तत्वावधान में समारोह पूर्वक मनाया गया

स्वामी श्रद्धानन्द जी ने जामा मस्जिद के मिम्बर से वेद मंत्रों के द्वारा शांति का सन्देश दिया – यशपाल 'यश'

जयपुर की आर्य संस्थाओं एवं आर्य समाज वैशालीनगर के संयुक्त तत्वावधान में स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज का 96वाँ बलिदान दिवस 25 दिसम्बर, 2022 को समारोह पूर्वक मनाया गया।

इस अवसर पर वैदिक चिन्तक ओमाश्रय सेवाधाम के संचालक श्री यशपाल 'यश' जी ने स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन से जुड़ी एक घटना का जिक्र करते हुए बताया कि एक बार स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने चांदनी चौक, दिल्ली में रौलेट एक्ट के विरोध में अंग्रेजी संगीनों के सामने सीना तान कर खड़े हो गये और कहा कि चलाओ गोली, तुम्हारी गोली पहले हमारे सीने में लगेगी उसके बाद देश के अन्य नागरिकों तक पहुंचेगी। विदेशी शासन से हतोत्साहित आमजन को उत्साहित करने वाले स्वामी श्रद्धानंद जी ने बिना सौहार्द बिगाड़े जामा मस्जिद की मिम्बर से वेद की ऋचाओं से शांति का सन्देश दिया। उन्होंने कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द जी ने गुरुकुल शिक्षा की पुनः स्थापना कर भारतीय संस्कृति की जड़ों को पुनर्जीवित किया। उन्होंने दलितोद्धार हेतु कांग्रेस अधिवेशन में प्रस्ताव पारित करवाकर

दलितोद्धार के लिए अनेक कार्य किये।

पं चन्द्र शेखर शर्मा ग्वालियर मुख्य वक्ता के रूप में बोलते हुए कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द जी ने जलियांवाला बाग नरसंहार के बाद अमृतसर में कांग्रेस अधिवेशन आयोजित करके आजादी के आन्दोलन को मजबूत किया।

इस अवसर पर सर्वश्री डॉ. के. पी. सिंह, एम. एल. गोयल, सुभाष आर्य प्रमुख आर्य वीर दल, वंशीधर, श्रीमती गायत्री पंवार, मोती लाल शर्मा, मानसरोवर प्रधान सुनील अरोड़ा, मंत्री तुंगनाथ त्रिपाठी, हेमंत आर्य, देवेन्द्र शास्त्री, नारंग तथा आर्य समाज के पदाधिकारी एवं कार्यकर्ताओं सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे। कार्यक्रम में पधारे सभी आगन्तुकों का आर्य समाज वैशाली के प्रधान श्री के. के. वशिष्ठ जी ने धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संयोजन तथा यज्ञ का संचालन श्री दीपक शास्त्री ने बड़ी कुशलता के साथ किया।

पंजीयन संख्या (R.N.I. No.)- DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/2021-23
Licence to Post without prepayment of Postage. U (c)-289/2021-23

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य समाज के त्यागी, तपस्वी एवं तेजस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें :- ***www.facebook.com/SwamiAryavesh*** व फेसबुक पेज को लाइक करें तथा अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।

ई-मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

इंडिया इंटरनेशनल सेन्टर में चारों वेदों के प्रथम विश्वकोष वेद मंजूषा के 17 खण्डों का लोकापर्ण समारोह भव्यता के साथ हुआ सम्पन्न

उपनिषदों व दर्शनों का मूल वेद में है – डॉ. कर्ण सिंह

वेद सार्वभौमिक व सार्वकालिक ज्ञान के स्रोत हैं – स्वामी आर्यवेश

वेद मंजूषा चारों वेदों में उपलब्ध विविध ज्ञान को दर्शायेगी –डॉ. मुरली मनोहर पाठक

दक्षिणी दिल्ली इंडिया इंटरनेशनल सेंटर में दिनांक 28 दिसम्बर, 2022 बुधवार को चारों वेदों के प्रथम विश्वकोष वेद मंजूषा (इनसाइक्लोपीडिया ऑफ वेदाज) के 17 खंडों का लोकार्पण किया गया। इस महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम के मुख्य अतिथि भारतीय संस्कृति के प्रसिद्ध मनीषी व चिंतक, विख्यात राजनीतिज्ञ माननीय डा. कर्ण सिंह जी तथा विशिष्ट अतिथि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नेता स्वामी आर्यवेश जी रहे। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता लाल बहादुर शास्त्री विद्यापीठ के कुलपति डॉ. मुरली मनोहर पाठक जी ने की। कार्यक्रम के मंच का संचालन युवा विद्वान् श्री नरदेव यजुर्वेदी (हॉलैण्ड) ने किया। कार्यक्रम में मंगलाचरण के लिए कन्या गुरुकुल उड़ीसा की छात्राओं के साथ विदुषी आचार्या शारदा देवी भी उपस्थित थीं।

कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए आर्य समाज के यशस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि वेद ईश्वरीय ज्ञान है और यह संसार उस ज्ञान की मदद से जीवन के रहस्यों को जानने के लिए उपलब्ध प्रयोगशाला है। इसे हम इस तरह से समझ सकते हैं कि वेदों का ईश्वरीय ज्ञान जीवन के उचित संचालन की थ्योरी है और संसाररूपी इस प्रयोगशाला में हमें उसका उपयोग करते हुए नवाचारों को खोजकर, जीवन रहस्यों को उजागर कर स्वयं के लिए तथा लोक कल्याण में अपना योगदान देना चाहिए। वेदों की तुलना कुरान, बाईबिल आदि ग्रन्थों से करना मूर्खता है। जिस तरह से पी.एच.डी. का कोई छात्र जब कोई शोध करता है, तो उसे शोध से संबंधित पूर्व में हुई खोजों की जानकारी के लिए तमाम ग्रन्थ और पुस्तकों का आलोड़न करना होता है। जिनको पढ़कर छात्र अपना शोध पूरा करके संबंधित दस्तावेज प्रकाशित करता है। ठीक उसी तरह सभी मत–सम्प्रदायों के ग्रंथों का स्रोत वेद है। धर्म ग्रंथों को

लिखने के लिए मर्मज्ञों व महान् लोगों ने वेदों की सहायता ली है। वेद में समस्त ज्ञान निहित है। वेद का पढ़ना–पढ़ाना हम सबका परम धर्म है। वेद ज्ञान को जन–जन तक पहुँचाने के लिए हम सबको दृढ़ संकल्पित होकर इसका प्रचार–प्रसार करना चाहिए। वेद एवं वेद मंजूषा को सभी विद्यालयों, पुस्तकालयों, गुरुकुलों तथा अन्य सभी धार्मिक एवं सामाजिक स्थलों पर रखवाने की व्यवस्था करनी चाहिए, जिससे आम जनमानस भी इसे सुविधाजनक पढ़ सकें। वेद मंजूषा को तैयार करने में स्व. श्री वेद प्रकाश शास्त्री का महनीय योगदान रहा है। उन्होंने अथक परिश्रम करके वेद को अत्यन्त सरल विधि में मंजूषा के रूप में तैयार करवाकर आम आदमी के लिए वेद ज्ञान सुलभ करने का कार्य किया। गीता प्रकाशन के संस्थापक स्व. श्री राधेश्याम गुप्ता के संकल्प को उनके सुयोग्य सुपुत्र श्री राजेश गुप्ता ने पूरा करके अत्यन्त सराहनीय कार्य किया है।

इस अवसर पर डा. कर्ण सिंह जी ने कहा कि वेद मंजूषा में वेदों के सारे सूत्रों को वर्णमाला के अनुसार रखा गया है, जिससे वेद को जानने व समझने में आम लोगों को काफी आसानी होगी। उन्होंने स्वर्गीय वेद प्रकाश शास्त्री और स्वर्गीय राधेश्याम के वेद मंजूषा की रचना के संकल्प को सराहा। उन्होंने कहा कि उपनिषदों तथा गीता का मूल भी वेद है। गीता प्रकाशन ने वेद मंजूषा तैयार करवाकर अत्यन्त प्रशंसनीय कार्य किया है।

अपने विचार रखते हुए श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. मुरली मनोहर पाठक जी ने बताया कि वेद मंजूषा का 17वां खंड सूची खंड है, जिसमें से व्यक्ति अपनी रुचि का विषय चुनकर वेदों की मनचाही धर्म सूक्ति को पढ़कर जानकारी प्राप्त कर सकता है। उन्होंने गीता प्रकाशन के संस्थापक स्वर्गीय राधेश्याम गुप्ता और स्वर्गीय वेद प्रकाश शास्त्री के प्रयासों के फलस्वरूप रचे गए वेद मंजूषा के लिए सभी को बधाई दी।

कार्यक्रम में प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् महेश विद्यालंकार व स्व. श्री वेद प्रकाश शास्त्री का पूरा परिवार (पुत्र व पुत्रियाँ), डॉ. नरेन्द्र वेदालंकार, श्री ओम प्रकाश यजुर्वेदी, श्री यशपाल शास्त्री, श्री सुभाष शास्त्री आदि भी उपस्थित थे। गीता प्रकाशन की ओर से श्री राजेश गुप्ता ने सभी अतिथियों व प्रतिष्ठित विद्वानों का इस अवसर पर शॉल व एक पौधा भेंटकर सम्मानित किया। कार्यक्रम के उपरान्त रात्रि भोज की भी समुचित व्यवस्था की गई थी। कार्यक्रम अत्यन्त उत्साहवर्द्धक रहा।

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002
के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (दूरभाष : 011-23274771)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।